प्रश्न और उत्तर

जिंदगी के थपेड़ों में

गुम हो चुके प्रश्नों को

खोज लेने से क्या होगा

जबकि बहरे हुए समय में

उत्तरों का छोर कहाँ है

स्मृतियों की जुगाली करता

क्लांत होता मन

समय के हारे मूल्यों

और मान्यताओं के दर्द में

समय सिर्फ घड़ियों के

पेंडुलम-सा हिलता है

छटपटाती है कुछ रूहें

आज़ाद होने को

शोर सुनने की ख्वाहिश में

सुन नहीं पाते मन का कोलाहल

जीवन जीने का

टूटता हुआ निश्चय

अहसास करा देता है

कितने बौने हैं हम

और यों

जहाँ के तहां रहते हैं प्रश्न

जहाँ के तहां रहते है प्रश्न !

राजकुमार जैन राजन

चित्रा प्रकाशन

आकोला -312205 (चित्तौड़गढ़)

राजस्थान